21. क्रांतिकारी शेखर का बचपन

स्वाध्याय

शेखर ने बाहर घूमने-मिलने जाना क्यो छोड दिया ?

- शेखर ने बाहर घूमने-मिलने जाना छोड़ दिया, क्योकि पहनने के लिए देशी कपड़े उसके पास पर्याप्त नही थे ।

शेखर के मस्तिष्क में कैसी पुकार पाहुचती थी ?

- शेखर के मस्तिष्क में एक नाटक का लेखक हिने की पुकार पहुचती थी ।

शेखर ने आग कैसे जलाइ ?

- शेखर ने घर के दीयो से मिट्टी का तेल लेकर उससे आग जलाई ।

शेखर गला खोलकर क्या गाने लगा ?

- शेखर गला खोलकर गाने लगा, "गांधीजी का बोलबाला । दुश्मन का मुंह काला ।"

अँग्रेजी बालक ने जवाब में क्या कहा ?

- अँग्रेजी बालक ने शेखर को चुप देखकर अपना नाम बताया और पूछा-क्या स्कूल में पढ़ते हो ?

घर के सदस्य बाहर गए तब शेखर ने क्या किया ?

- घर के सदस्य बाहर गए, तब शेखर ने घर के सभी कमरो में से विदेशी कपड़े लेकर नीचे एक खुली जगह में इकट्ठे किए | उनके ढेर पर मिट्टी का तेल डाला और आग लगा दी |

शेखर के नाटक का विषय क्या था ?

- शेखर के मन में एक स्वाधीन लोकतन्त्र भारत की छबी बसी थी जिसके राष्ट्रपति महात्मा गांधी थे | उसमें बताई, बुराई जैसी गांधीजी की प्रवृतियों और असहयोग आंदोलन का समावेश था |

- शेखर का यह स्वप्न ही उनके नाटक की हलचल में भी समाविष्ट था |

अँग्रेजी बालक के प्रश्न का उतर शेखर ने क्यो नही दिया ?

- अँग्रेजी बालक के स्वर में अहंकार था | वह अपने अँग्रेजी ज्ञान का परिचय देना चाहता था | शेखर को उसका प्रश्न बुरा और अपमानजनक भी लगा | इसलिए उसने अँग्रेजी बालक के प्रश्न का उतर नही दिया |

पिताने क्रुद्ध स्वर में शेखर से क्या कहा ?

- शेखर ने अँग्रेजी बालक के कीसी भी प्रश्न का उतर नही दिया | पिता नही चाहते थे की वह बालक शेखर को अँग्रेजी से अनभिज्ञ समझे | इसलिए उन्होने क्रुद्ध स्वर में शेकखर से कहा, “उतर क्यो नही दिया ? क्या तुम्हारा मुँह टूट गया है ?

शेखर उतर देने से कैसे कहा ? क्यो ?

- बांकीपुर स्टेशन पर शेखर ने बालक के अँग्रेजी प्रश्नो के उतर न देकर चुप्पी-सी साध ली थी | इससे पिता को क्रोध के साथ दु:ख भी हुआ था | घर आकार उन्होने शेखर की माँ से कहा, हमारे लड़के बुद्धू है | किसी के सामने उनका मुँह ही नही खुलता |

शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा क्यो हो गई थी ?

- महात्मा गांधी ने देश में असहयोग आंदोलन शरू किया था | चारो तरफ स्वदेशी की हवा बहने लगी थी | शेखर के मन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा था | वह गांधीजी के प्रति अपार श्रद्धा रखता था | गांधीजी स्वदेशी वस्तुओ के उपयोग का आग्रह करते थे | इसलिए शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा हो गई थी |

शेखर के घर में अँग्रेजी भाषा की प्रति गहरा प्रभाव था, ऐसा हम कैसे कह सकते है ?

- शेखर के पिता और भाई घर में अँग्रेजी में बात करते थे | पिता शेखर को भी भाइयो के साथ अँग्रेजी में बात करने के लिए प्रोत्साहित करते थे | शेखर भी शैशव से अँग्रेजी बोलता था | शेखर की पहली आया ईसाई थी और अँग्रेजी बोलती थी | उसका पहला गुरु भी एक अमरीकन मिशनरी था, जो दिनभर अँग्रेजी बोलता था | शेखर को ऐसा लगता था जैसे अँग्रेजी ही उसके परिवार की मातृभाषा हो | परिवार में अँग्रेजी के प्रति ऐसा प्रेम देखकर हम कह सकते है की शेखर के घर में अँग्रेजी भाषा का गहरा प्रभाव था |

शेखर का चरित्र-चित्रण कीजिए |

- शेखर एक कोमल मन का किशोर है | गांधीजी के असहयोग आंदोलन का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा है | स्वदेशी की हवा से प्रेरित होकर उसे विदेशी मात्रा से घृणा हो जाती है | वह अपने घर के विदेशी वस्त्रो को खुशी-खुशी जला देता है | वह अँग्रेजी माध्यम का विधार्थी है, पर अँग्रेजी को विदेशी भाषा मानकर उससे नफरत करता है और हिन्दी पढ़ने में रुचि लेता है | वह अँग्रेजी

बालक के अँग्रेजी में पूछ गए प्रश्नो का उतर नही देता | पिता द्वारा बुद्धू कहलाना स्वीकार करते है, पर अँग्रेजी बोलना उसे स्वीकार नही | इस प्रकार शेखर गांधी युग का एक प्रिय बाल पात्र है |

शेखर ने नाटक लिखना कब आरंभ किया ? क्यो ?

- शेखर असहयोग और आंदोलनो से अत्यंत प्रभावित था | उसे विदेशी मात्र से घृणा हो गई थी | अँग्रेजी भाषा से भी वह बेहद नफरत करने लगा था | परिवार के नियंत्रण के कारण वह सक्रिय रूप से किसी आंदोलना में भाग नही ले सकता था | ऐसी स्थिति में उसने नाटक लिखना आरंभ किया |

- शेखर को गांधीजी के प्रति अपनी अपार श्रद्धा व्यक्त करनी थी | साथ ही उसे अपने हीन्दी-ज्ञान को भी प्रभावित करना था | इसलिए अपनी भावनाओ को प्रकट करने के लिए शेखर ने नाटक लिखना आरंभ किया |

विरुद्धार्थी शब्द बताइए |

सहयोग –

विदेशी –

बाहर –

दुश्मन –

अंकुर –

- सहयोग – असहयोग
- विदेशी – स्वदेशी
- बाहर – भीतर
- दुश्मन – दोस्त
- अंकुर – निरंकुशता